BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

जय माँ भवानी की प्रगट कथा

ॐ सर्व मगलं माँगल्य शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्यै त्यम्बके गोरि नारायणि नमोऽतुते ॥

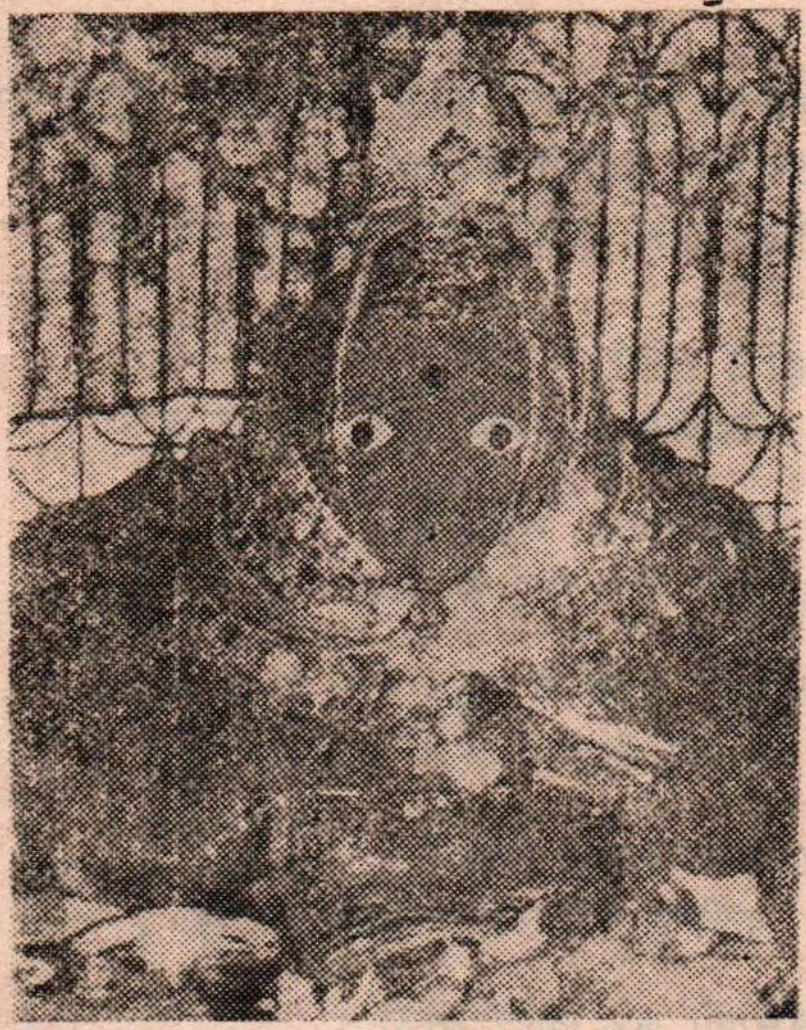

प्राचीनकाल का तीर्थ श्री बीजासन माता स्थान भैसवामाता का इतिहास हैं । माँ बिजानन देवी का भव्य मन्दिर मध्य-प्रदेश के राजगढ़ जिले की तहसील सारंगपुर के उत्तर में १९ किलो मीटर दूरी पर सारंगपुर के सण्डावता राजमार्ग से (३) तीन

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

स्थान- तलाई ।

लेकिन कुछ दिनो बाद उस स्थान से थोड़ी दूर पर माँ देवी पृथ्वी से बाहर आकर आप लोगो का दुख दूर कर रही हैं माँ के सामने पहले पाड़े बकरे की बलियाँ होती थी मगर भारत स्वतन्त्र हो जाने पर यहाँ बली बन्द कर दी गई ऊंची पहाड़ी पर आज लाखो रूपयो का भव्य मन्दिर निर्माण हो चुका है । यहाँ लाईट तथा पीने के पानी की व्यवस्था है सन १९८७ में सरकार द्वारा १ लाख रुपये का सीड़ाव निर्माण हुआ यहाँ के पुजारी धाकड़ हैं तथा पहले धाकड़ पुजारियो के बजी के लिए भील आदिवासियो को रखा था जो आज कुछ हिस्सा भील पुजारियो को लगता हैं । माव की बसंत पंचमी से यह मेला भराता है । जिस वक्त मा के भक्त लाखो की संख्या में

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

किलो मीटर पूर्व में स्थित हैं यहाँ पर आने–जाने के लिए हर घण्टे पर बस सेवा उपलब्ध है । यह स्थान करीब ४०० साल से भी अधिक समय से स्थित हैं । पहले बन्जारे लोगो की बालब देश आया करती थी इस प्रकार एक बन्जारे का काबीला इस स्थान से १२ किलो मीटर की दूरी पर ग्राम सुल्तानियाँ में पड़ाव किये हुए थे । काबीले के सरदार का नाम लाखा बंजारा जिसकी एक कन्या थी कुवारी थी और अपने परिवार के साथ मवेसी चराया करती थी मगर कुछ लोग इस स्थान के उत्तर में एक नाला हैं जिसमें यह सब अपने मवेसियो को पानी पिलाते थे मगर पानी पिलाने यह कन्या नही जाती थी तो कुछ लोगो ने उनके पिताजी से शिकायत की तुम्हारी बेटी मवेसियो को पानी नही पिलाती हैं । सो पिता ने कहा यह बात में अपनी आंखो से देखूगा मेरी कन्या मवेसियो को पानी पिलाती हैं या नही सो दुसरे व लाखा बन्जारा अपनी बेटी के साथ चुपके-चुपके चलने लगे सो उसने देखा की यह कन्या इस स्थान के पूर्व में थोड़ी ही दूर एक तलाई हैं जिसको आज दुध तलाई के नाम से जानते है । में निर्वस्त्र होकर बैठ गई और तलाई दूध से भर गई और मवेसियो ने दूध पीना शुरू कियन ।

मगर संयोग से उस कन्या की निगाहे अपने पिता पर पड़ी उस कन्या ने पृथ्वी माँ से कहा माँ मुझे अव अपने आँचल में समेट लो वह कन्या वही पृथ्वी में समा गई कुछ दिन वाद उस देवी ने अपना एक हाथ पृथ्वी से निकाला ।

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

पुत्र वालो को पुत्र की प्राप्ति होती है। यहाँ पर किसी के शरीर में माँ नही आती हैं माँ तो केवल श्रद्धा की भूखी हैं। माव के बड़े महिने में शुक्ल पक्ष में यात्री गण अपने बच्चो की मान उतारते हैं। पूर्णिमा को माँ के दर्शन बड़ी कठिनाई से होते है। क्योकि भक्तों की बड़ी भीड़ रहती हैं। मां का एक मन्दिर भी अति सुन्दर वना हुआ हैं। माँ डोली (पालकी) में पहाड़ी के मन्दिर से गाँव के मन्दिर तक जाती हैं। गाँव के मन्दिर में आरती पूजन अरचना करके वापस पहाड़ी के मंदिर तक एक ही साथ, दौड़ते हुए मां की डोली व भक्तजन आते हैं इस वक्त पुलिस की पूर्ण व्यवस्था रहती हैं। यहाँ पर जेव कतरे भी अपना कार्य करते हैं। मगर माँ की कृपा से पकड़े जाते हें। इसी माँ की कृपा व विशेषता हैं इस सिंह वाहनी दुर्गा मां का स्थान एक ऐसी पहाड़ी पर हें जिस पहाड़ी नीचे एक तालाब हैं। जो स्थान की शोभा बढ़ाने में स्थान रखता हैं। कहते हैं कि मन्दिर का निर्माण देवास स्टेट के महाराजा ने चाँदी के गेती तथा फावड़ें से किया मगर किसी कारण से मन्दिर का निर्माण महाराजा द्वारा नही हों सका। मन्दिर निर्माण के समान से फिर एक धर्मशाला का निर्माण किया गया मगर फिर माँ की इच्छा सें सन १९६८ ई. से मन्दिर का निर्माण भक्तजनो के तन, मन, धन द्वारा मन्दिर निर्माण अब भी हो रहा हैं।

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

जय माँ बिजासन

जग रूठे तो रूठ जा माँ करूणा कर होय ।
रिद्धि सिद्धि संग में पूर्ण मनोरथ होय ॥

श्री हनुमानजी

मां बिजासन की नगरी भैसवा से माँ के भक्त दर्शन के लिए प्रस्थान करते हैं । तो गाँव के मध्य में बस स्टेण्ड के समीप तालाब दिखाई पड़ता है । तालाब के मध्य में बीर

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

बजरंगबली हनुमानजी का मन्दिर है। भक्त सबसे पहले श्री हनुमान जी के दर्शन करते हैं।

श्री हनुमानजी के स्थान के सामने नीलकंठ महादेवजी विराजमान है। महादेवजी के पास एक कुआ है, कुए के पास में मां शीतला देवी का चबूतरा हैं। जिस पर माँ शीतलादेवी विराजमान है। वह से भक्तजन दर्शन करते हुए आगे बढ़ते हैं। पास में ही श्री देवनारायण जी महाराज का प्रसिद्ध (चमत्कार) स्थान हैं, भक्तजन श्री देवनारायणजी (हरदमलाला) के दर्शन करके चौराहा पर आते है। चौराहा से मां विजासन के दर्शन के लिए दर्शनार्थी उत्तर दिशा की और गमन करते हैं। कुछ आगे चलने पर तालाब के किनारे पर रोड़ से बायी और माँ परी के स्थान से दर्शन कर श्रद्धालुजन आगे बढ़ते हुए। पुलिया पार कर बायी और मऊए (मवड़ी) के पेड़ पर श्री भैंसासूर जी महाराज के दर्शन कर सीड़ीया चड़ते समय बायी और द्वारपाल भैरव बाबा विराजमान हैं, श्री बाबा के दर्शन करते हुए जय माताजी कहते हुए, श्रद्धालुजन सीड़िया चड़कर पहाड़ी पर पहुचते है, ऊपर चढ़ने के पश्चात् ही माँ बिजासन के मन्दिर का शिखर व लहराती हुई पताका दिखाई देने लगती है।

कुछ आगे बढ़ने के पश्चात् ही वापस पहाड़ी से घुमता हुआ रोड़ मिलता हैं, रोड़ पर चलकर श्रद्धालुजन माँ जगत–

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

शिखर दर्शन

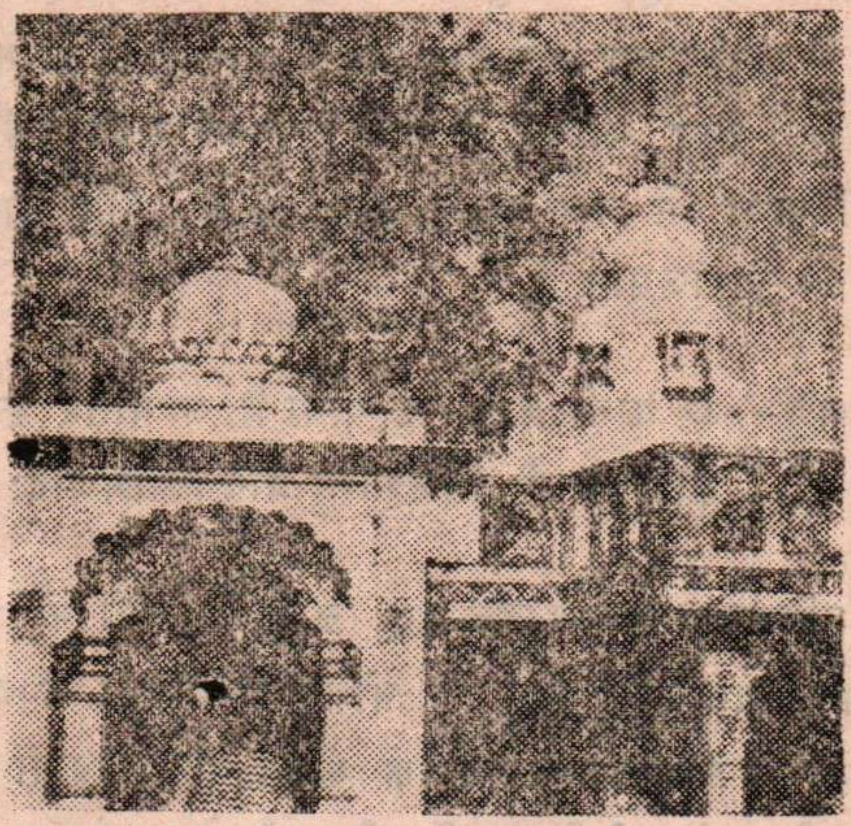

जननी के दरबार में पहुचते हैं। भक्तजन पूजन सामग्री लेते हैं, फिर मां विजासन की बड़ी गादी एवं माँ के द्वारा निकाला गया हाथ के दर्शन कर घंटाल बजातें हुए चिन्ता हरने वाली दु:खियो के दु:ख मिटाने वाली साक्षात् माँ बिजासन देवी जी के दर्शन पाकर श्रद्धालु जन पूजन अर्चना व आरती करते हैं माँ जगदम्बा को प्रणाम करतें हैं।

मंत्र– ॐ आवाहनम् न जनामी, न जनामि विसर्जनम।
पुजा चैव न जनामि, क्षम्य ताम् परमेश्वरी: ॥

प्रणाण करने का मंत्र बोलते है। माँ की बभूति व

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

पंचामृत पाकर भक्त जन माँ आदि शक्ति की परिक्रमा लेते हुए कालाजी महाराज भूणाजी महाराज एवं महिष मर्दनी माँ काली के दर्शन कर परिक्रमा मां बिजासन के दर्शन कर पूरी करते हैं । फिर मन्दिर से नीचे उतरकर सभी देवी देवताओ की परिक्रमा में आगे बढ़ते हुए माँ के पीछे पाताल भैरव खायी में विराजमान हैं ।

मंत्र– ॐ यानी कानी च पापानी जन्मांतर क्रतानी
तानी–तानी त्रिजश्यन्तु प्रदिक्षणाम पदैः पदैः ।

परिक्रमा मंत्र बोलते हूए सभी सिद्धियो के दाता सिद्ध वट कों नमन करते हुए एवं चोसठ योगिनियो के दर्शन करते हुए माँ बिजासन महारानी के दर्शन कर परिक्रमा पूरी करते हैं । मन्दिर से पूर्व दिशा की ओर माँ के भक्त दरवाजे से होते हूए बाबा रामदेवजी के दर्शन करते हुए वही भोले शंकर के दर्शत करते हैं और पंचाक्षरीय मंत्र (ॐ नमः शिवायः) बोलते हैं । प्रणाम करते है । भोलेशंकर के मन्दिर से पूर्व की और पलाश (खाकरा) के वृक्ष के समीप दूध तलाई के दर्शन पाते हैं । वहा पर श्रद्धालुजन विश्राम करते हैं । विश्राम करने के पश्चात् अपने स्थान को प्रस्थान करते हैं । इस प्रकार मां के दर्शन पाकर भक्तजन अपने जीवन को सुखमय बनाते है । मां सभी भक्तजनों की आशाए, मनोकामनाए, पूर्ण करती हैं। माँ बिजासन के दरबार से जय माताजी कहते हुए जाते हैं ।

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

माँ का अद्भूत चमत्कार

सारंगपुर से बीस किलो मीटर दूर भैंसवा माता मन्दिर में देवी मूर्ति पर रखे आभूषणो की चोरी करने गए आरोपी अन्धा होने की सनसनी खोज मामला सामने आया आँखो की ज्योति खो जाने के कारण आरोपी भाग भी नही सका और पकड़ा भी गया ।

विस्तार से:- इस घटना के सम्बन्ध में मिली विस्तृत जानकारी के मुताबिक मदनलाल पिता कालुराम गुजर निवासी मलकाना था । छापीहेड़ा तहसील जीरापुर माताजी के मन्दिर में चोरी करने की नियत से आरती के बाद रात ८ बजे घूसा मदनलाल ने माताजी के आभूषण एवं अन्य समान चुराया लेकिन इस चोरी के साथ मदनलाल की आँखो की रोशनी चली गई बुरी तरह घबराकर मदनलाल ने चोरी के आभूषण गडडा करके वही गाड़ दिए और अपनी आंखो की रोशनी जाने के बाद वह रात भर मन्दिर की पहाड़ी पर ही घूमता रहा । दूसरे दिन प्रातःकाल जब पुजारियो ने माताजी की मूर्ति पर आभूषण नही देखे तो खोज बीन शुरू हुई । वह घूम रहा मदनलाल के कपड़ो पर सिन्दूर लगा पाया गया तो पुजारी द्वारा पूछताछ करने पर आरोपी ने चोंरी कबूल करने के बाद उसकी आँखो की रोशनी वापस आ गई इस चमत्कार की चर्चा आस-पास गावो में पहुची श्रद्धालु माताजी के मन्दिर की और

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

दर्शन करने के लिए आने लगे आरोपी को पुलिस के हवाले कर दिया जहां उसने अपना आरोप कबूल कर लिया। आरोपी के खिलाफ धारा ४५१ और ३८० के तहत प्रकरण कर न्यायधीश की अदालत में उसे जेल भेज दिया। बातचीत के दौरान इस प्रतिनिधि को आरोपी मदनलाल ने बताया कि जैसे ही मैने मन्दिर में चोरी की मुझे दिखना बन्द हो गया। में वही पर गिर गया इसके बाद मेरे सामने लगभग ८० साल की एक बुढ़िया लाल कपड़े में चमकती सलवार के साथ मेरे सामने प्रकट हुई। उसने मुझसे कहा कि एक कदम भी आगे बढ़ाया तो तूझे मार डालूगी और चार मिनिटो में ही लाल कपड़ो में बुढ़िया के रूप में आई माताजी मेरे सामने से गायब हो गई। यह बात कहते-कहते वह कई बार रोया और माताजी से क्षमा माँगता रहा।

संत का अखाड़ा

मां बिजासन मन्दिर के १ कि.मी. पीछे सन्स का आखाड़ा हैं। कहते है कि ये बड़ें ही चमत्कारी थे यहा पर दशहरा के दिन दर्शन करने से मनो-कामना पूर्ण होती है।

-श्री गुरूवै नमः

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

माँ का चमत्कार

माँ की महिमा निराली मां के अनेक चमत्कारो में ९६वां वच्चो का चमत्कार है । माघ सुदी १४ की रात को करीव ९ वजे माताजी के मन्दिर के पास एक नीम का पेड़ है । उस पेड़ के पास रोड़ निकला हुआ है । नीम के नीचे दर्शनार्थी एवं उनके छोटे वच्चों के साथ सो रहे थे । अचानक रोड़ से एक वाहन (कार) आई और ड्रायवर(चालक) को यह मालुम न था । कि नीम के नीचे दर्शनार्थी सो रहे है । जैसे ही वाहन आया उसो और तीनो बच्चे सोए हुए थे । और वाहन आते ही सीधा बच्चो पर चढ़ गया । जैसे ही वाहन बच्चो पर चढ़ा वेसे ही पास के दर्शनार्थी और दुकानदार चिल्लाकर वाहन की और दौड़े अचानक से गाड़ी बन्ध हो गई । फिर सभी लोगों ने वच्चो के ऊपर खड़ी वाहन को धकेलकर पीछे हटाया और सभो ने बच्चो को उठा कर देखा तो बच्चे गहरी नींद में सो रहे थे । फिर माता पिता ने उन्हे सम्भाला और देखा तो बच्चो को माँ बिजासन की कृपा से कोई चोट नही आई । और उस गाड़ी वाले ने माँ के दरबार में वार वार विनती की मां आज आपने मुझ पर और बच्चो पर जो कृपा की वेसी ही सभी भक्तजनों पर कृपा की दृष्टि डाले रखना ।

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

कार खाई में गिरीकाँच भी नही टूटा

माव सुदी १४ दि.१४-२-९४ समय दोपहर २बजे मां के सामने अनेक वृक्ष है वह अनेक वाहन रूकते और भोजन बनाते मगर माँ को तो चमत्कार दिखाना था । ग्राम पंचदेहरिया की एक कार आई और अचानक ब्रेक फेल हो गये जो हो ब्रेक फैल हुए । गाड़ी ३०० फिट नीचे गाई में अनेक पत्थरो का सामना व वृक्षो से टकराकर गड्ढे कुदते हुए मानो रोड़ पर जा रही हैं । एक जगह पर ऐसी खड़ी रही जहाँ अगर एक इंच भी आगे वढ़ आती तो कुए मे कार रखा जाती हैं मगर कार वही अपने आप रूक गई और उस कार में ९ यात्री भी ऐसे बैठे थे जैसे उन्हे कुछ भी नही हूआ हो । और वह से उतर कर यात्री माँ की जय-जयकार करते हुए आ गए । और ड्रायवर कहता है कि मैने गाड़ी रोकना चाही पर गाड़ी न सकी क्योकि गाड़ो का ब्रेक लगाते-लगाते गाड़ी लगभग दस पन्द्रह फिट खाई के अन्दर जाने के कारण गाड़ी सम्भल न पायो और सभी के देखते-देखते गाड़ी लगभग ३०० फीट नीचे खाई में कुए के किनारे पर जाकर खड़ी होगई ।

मगर माँ की कृपा से गाड़ी और गाड़ी में बैठे यात्रियो को किसी भी प्रकार की चोट न लगी एवं फिर माँ बिजासन के मन्दिर के पीछे से गाड़ी को वापस पहाड़ी पर चड़ाकर सभी दर्शनार्थियो ने अपने सभी साथियो के साथ माँ की जय-जय कार करते हुए व नाचते हुए माँ की महिमा की जय-जयकार की । यही मां बिजासन का अद्भूत चमत्कार था ।

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

श्री दुर्गा सप्तशती के सम्पुष्ट मंत्र

सम्पुष्ट लगाकर पाठ करने से अभिलाषित उद्देश्य का फल प्राप्त होता है ।

१) विश्व के अभ्युदय के लिए–
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं ।
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।।

२) विपत्ती नाश के लिए–
शरणागतदीनार्त परित्राणाँ परायणं ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ।।

३) महामारी नाश के लिए–
जयन्ती मंगला काली भद्र काली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोंऽस्तुते ।।

४) कल्याण के लिए–
सर्व मंगल माँगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।।

५) वाधा मुक्त होकर धन पुत्रादि की प्राप्ति के लिए–
सर्वाबाधा विनिर्मुक्ता धन धान्य सुतान्वितं ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्याति न संशमः ।।

६) शक्ति प्राप्ति के लिए–
सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्ति भुते सनातनि ।
गणाश्रये गुणमय नारायणि नमोऽस्तुते ।।

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

आरती

हृदय बसो न भवानी बसो राजरानी आज मोरे अगं
हृदय बसो न भवानी बसो राजरानी आज मोरे अगं
आप निरंजन करे कऽपना –२

पाँचो पाण्डव सत्यवादी,
चाँद सूरज थारि करे रसोई –२

इन्दर भरे जल जमुना से पानी, आज मोरे....
हरिया, पीपल आप द्धवारे –२

लाल ध्वजा लहरानी, मां भैंसवागढ़ की रानी, आज मोरे....
सिंह पिठ पर चड़ी भवानी –२

लाल ध्वजा लहराये माँ पवागठ की रानी, आज मोरे...
सरस्वती का फन्द छुड़ाया –२

हैंरि मइया लागरियो अगवानी माँ लागरियो अगवानी, आज मोरे....
देवीदास तेरा गुण गावे –२

हैंरि मइया सब देवन में सुही अगवानी
मां तुही लाज रानी आज मोरे अगं
हृदय बसो न भवानी बसो राज रानी आज मोरे...

माँ दुर्गा का ध्यान

संकट और दुखो से भरे इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कठिनाइयां आती हैं, इन विपत्तियो से बचाने वाली एक मात्र माँ दुर्गा हैं, सच्चे मन से माँ बिजासन का ध्यान करखे से मन को शाँति मिलेगी और दुर्गा माता विपत्तियो से रक्षा करेगी ।

BHESWAMATA.COM
OFFCIAL SITE OF BIJASAN DHAM

माँ दुर्गा के ३२ नाम

दुर्गा, दुर्गातिशमन, दुर्गपद, विनिवारिणो, दुर्गमच
दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी, दुर्गद्धारिणी, दुर्गनिहन्त्री, दुर्ग
दुर्गम ज्ञानदा दुर्गदैत्यलोक, दवानला, दुर्गमा दुर्गमा
दुर्गमात्मस्वरुपिणी दुर्ग मार्ग प्रदा, दुर्गम विद्या, दुर्गम
दुर्गमज्ञान सस्थाना, दुर्गमध्यानभसिनी, दुर्गमोहा, दुर्गम
दुर्गमार्थस्वरुपिनी दुर्गमासुरसंहन्त्री, दुर्गमायुधधारिणी, दुर्ग
दुर्गमता, दुर्गमेश्वरी दुर्गभीमा, दुर्ग भामा, दुर्गमा, दुर्गदा

सूचना

१) मां विजासन देवी के यहां हर अष्टमी को अभिषेक कि
जाता हैं ।

२) माँ विजासन आरती प्रातः काल ६ वजे व सायं
सूर्यास्त के पश्चात आरती होती है ।

३) सायंकाल आरती के पश्चात माँ विजासन मन्दिर में प्र
निषेध हैं ।

४) मन्दिर प्रागण में भोंजन करना व धुम्रपान करना
हैं । व प्रागणं में जुते चप्पल व मोजे ले जाना म
मना हैं ।

५) मन्दिर जगत की वाते करने के लिए नही हैं । मा
पूजा अर्चना ध्यान करने के लिए है । अपशब्दो का प्र
न करे व शान्ति बनाये रखे ।